IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में भाषा अधिगम और संप्रत्यय निर्माण: एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ यासमीन अशरफ

सहायक आचार्य, भाषा शिक्षा

शिक्षा विभाग,

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, एन.सी.ई.आर.टी.

अजमेर, राजस्थान

शोध सारांश

बालक भाषा को जन्मजात क्षमताओं, संज्ञानात्मक विकास, पर्यावरणीय संपर्क और सामाजिक प्रोत्साहन के संयोजन से सीखता है। यह अनुभूत सत्य है कि व्यक्ति की सम्पूर्ण चिंतनरूपी ऊर्जा के प्रस्फुटीकरण का माध्यम भाषा ही है। संप्रत्यय निर्माण के माध्यम से भाषा अधिगम बच्चों के संपूर्ण विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब बच्चे अपने अनुभवों, वस्तुओं और घटनाओं को समझने के लिए अवधारणाएँ बनाते हैं, तो वे उन अवधारणाओं को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्द और भाषा संरचनाएँ सीखते हैं। उदाहरण के लिए- "बड़ा" या "छोटा" जैसी संज्ञाएँ और विशेषण तभी समझ में आते हैं जब बच्चा आकार की अवधारणा को समझता है। दूसरा उदाहरण संबंधो का जिसमें बालक वातावरण के संपर्क से यह संप्रत्यय बना लेता है कि उसे किस सदस्य को किस नाम से बुलाना है। माँ, दादी, दीदी, पिता, भाई इत्यादि । संप्रत्यय निर्माण भाषा अधिगम की नींव है, क्योंकि यह बच्चों को शब्दों के अर्थ, उनके उपयोग और अलग- अलग संदर्भों में उनके सही प्रयोग को समझने में मदद करता है। भाषा के माध्यम से बच्चे अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना, तुलना करना, वर्गीकृत करना और विश्लेषण करना सीखते हैं। इस प्रकार, संप्रत्यय निर्माण और भाषा अधिगम एक-दूसरे के पूरक हैं। प्रभावी भाषा शिक्षण के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों को संप्रत्यय के विषय में अनुभवों, गतिविधियों और संवाद के माध्यम से सिखाई जाएँ, ताकि वे भाषा का अर्थपूर्ण और व्यावहारिक रूप से प्रयोग कर सकें। प्रस्तुत

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य है- भाषा अधिगम की प्रक्रिया का विश्लेषण करना, संप्रत्यय निर्माण की प्रक्रिया का अध्ययन करना, भाषा अधिगम में संप्रत्यय निर्माण की भूमिका को समझना और भाषा शिक्षण और संप्रत्यय निर्माण से जुड़े मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणों का अध्ययन करना है । शोध प्रश्न के रूप में बालक किस प्रकार भाषा को आत्मसात करता है और उसके मस्तिष्क में कैसे संप्रत्ययों का निर्माण होता है? को शामिल किया गया है । प्रस्तुत शोध पत्र में विवेचन विश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया गया है तथा विषयगत विश्लेषण को केंद्र में रखकर भाषा अधिगम और संप्रत्यय निर्माण संबंधी सिद्धांतों, संकल्पनाओ तथा एक दूसरे के साथ परस्पर संबंध को व्याख्यायीत किया गया है । भाषा संप्रत्यय से जुड़े अवधारणाओं को उजागर कर संप्रत्यय निर्माण की भूमिका को विस्तार से वर्णित किया गया है । शैक्षिक मनोविज्ञान के प्रमुख सिद्धांतों में भाषा अधिगम और संप्रत्यय निर्माण को विस्तृत रूप से समझाया गया है।

बीज शब्द- संप्रत्यय निर्माण, भाषा अधिगम, संज्ञानात्मक विकास, अवधारणाएँ, आत्मसात, भाषा शिक्षण, अनुकरण, प्रोत्साहन और अनुक्रिया

1. परिचय

बालक भाषा को जन्मजात क्षमताओं, संज्ञानात्मक विकास, पर्यावरणीय संपर्क और सामाजिक प्रोत्साहन के संयोजन से सीखता है। भाषाविज्ञान में संप्रत्यय निर्माण को अर्थविज्ञान (Semantics) और मनोभाषाविज्ञान (Psycholinguistics) के अंतर्गत विस्तार से अध्ययन किया गया है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से, भाषा अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने अनुभवों और सामाजिक संपर्कों के आधार पर नए संप्रत्ययों का निर्माण करता है। व्यवहारवाद, संरचनावाद और संज्ञानात्मक सिद्धांतों ने भाषा अधिगम में संप्रत्यय निर्माण की प्रक्रिया को भिन्न-भिन्न रूपों में व्याख्यायित किया है। यह अनुभूत सत्य है कि व्यक्ति की सम्पूर्ण चिंतनरूपी ऊर्जा के प्रस्फुटीकरण का माध्यम भाषा ही है । इस तथ्य को बहुत पहले ही भारतीय परंपरा में भाषा दार्शनिक भर्तृहरि के द्वारा भाषाई दर्शन के रूप में स्पष्ट कर दिया गया था ।

न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते ।
अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते ॥

(वाक्यपदीयम्, ब्रह्मकाण्डम्, १२३)

न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते (इस संसार में ऐसा कोई भी ज्ञान (प्रत्यय) नहीं है, जो शब्दों के साथ न जुड़ा हो)

- हर प्रकार का ज्ञान, विचार या अनुभूति किसी न किसी रूप में भाषा (शब्दों) से जुड़ी होती है।
- जब हम मौन रहकर भी सोचते हैं, तब भी हमारे विचार हमारे जानने वाले शब्दों और भाषा के अनुसार ही आकार लेते हैं।
- यह श्लोक यह दर्शाता है कि ज्ञान और भाषा (शब्द) एक-दूसरे से अलग नहीं हो सकते; हर ज्ञान शब्दों के साथ ही प्रकट होता है।

अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते (सम्पूर्ण ज्ञान ऐसा प्रतीत होता है मानो वह शब्दों से भेद दिया गया (या उसमें समाहित हो गया हो)

- "अनुविद्धमिव" (जैसे भेदा गया हो) का अर्थ है, जैसे मोतियों की माला में धागा गुंथा होता है, वैसे ही शब्द हर ज्ञान में गुंथे हुए हैं।
- हमारी समझ, चाहे वह कितनी भी अमूर्त (abstract) क्यों न हो, शब्दों के माध्यम से ही प्रकाशित और अभिव्यक्त होती है।

यह श्लोक दर्शाता है कि भाषा (शब्द) मानव ज्ञान का मूल आधार है। भारतीय दर्शन, विशेषकर मीमांसा और न्याय दर्शनों में, यह माना गया है कि शब्द केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि ज्ञान की संरचना का भी आधार है। आज भी यह बात उतनी ही प्रासंगिक है - हमारा सोचना, विश्लेषण करना और संवाद करना, सब कुछ भाषा पर निर्भर है। यहाँ तक कि जब हम किसी बात को अंतःकरण से जानते हैं, तब भी उसे व्यक्त या समझने के लिए शब्दों की आवश्यकता होती है। यह श्लोक यह भी इंगित करता है कि शुद्ध रूप से अशब्दीय या अव्यक्त ज्ञान संभव तो है, पर वह अत्यंत दुर्लभ या सामान्य अनुभव से परे है। मानव ज्ञान और भाषा (शब्द) का अटूट संबंध है। संसार में कोई भी ज्ञान ऐसा नहीं है जो शब्दों के साथ न जुड़ा हो; सारा ज्ञान शब्दों के माध्यम से ही प्रकाशित और अभिव्यक्त होता है।

संप्रत्यय निर्माण के माध्यम से भाषा अधिगम बच्चों के संपूर्ण विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब बच्चे अपने अनुभवों, वस्तुओं और घटनाओं को समझने के लिए अवधारणाएँ बनाते हैं, तो वे उन अवधारणाओं को व्यक्त करने के लिए उपयुक्त शब्द और भाषा संरचनाएँ सीखते हैं। उदाहरण के लिए- "बड़ा" या "छोटा" जैसी संज्ञाएँ और विशेषण तभी समझ में आते हैं जब बच्चा आकार की अवधारणा को समझता है। दूसरा उदाहरण संबंधो का जिसमें बालक वातावरण के संपर्क से यह संप्रत्यय बना लेता है कि उसे किस सदस्य को किस नाम से बुलाना है। माँ, दादी, दीदी, पिता, भाई इत्यादि । संप्रत्यय निर्माण भाषा अधिगम की नींव है, क्योंकि यह बच्चों को शब्दों के अर्थ, उनके उपयोग और अलग-अलग संदर्भों में उनके सही प्रयोग को समझने में मदद करता है। भाषा के माध्यम से बच्चे अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना, तुलना करना, वर्गीकृत करना और विश्लेषण करना सीखते हैं। इस प्रकार, संप्रत्यय निर्माण और भाषा अधिगम एक-दूसरे के पूरक हैं। प्रभावी भाषा शिक्षण के लिए यह आवश्यक है कि बच्चों को संप्रत्यय के विषय में अनुभवों, गतिविधियों और संवाद के माध्यम से सिखाई जाएँ, ताकि वे भाषा का अर्थपूर्ण और व्यावहारिक रूप से प्रयोग कर सकें।

2. शोध का उद्देश्य

1. भाषा अधिगम की प्रक्रिया का विश्लेषण करना ।
2. संप्रत्यय निर्माण की प्रक्रिया का अध्ययन करना ।
3. भाषा अधिगम में संप्रत्यय निर्माण की भूमिका को समझना ।
4. भाषा शिक्षण और संप्रत्यय निर्माण से जुड़े मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणों का अध्ययन करना ।

3. शोध प्रश्न- बालक किस प्रकार भाषा को आत्मसात करता है और उसके मस्तिष्क में कैसे संप्रत्ययों का निर्माण होता है?

4. संबंधित साहित्य की समीक्षा

- **संप्रत्यय निर्माण की प्रक्रिया और उसका महत्व**

  भाषा अधिगम में संप्रत्यय निर्माण (Concept Formation) एक केंद्रीय भूमिका निभाता है। बच्चों के मानसिक विकास की प्रारंभिक अवस्था में ही संप्रत्यय निर्माण की प्रक्रिया आरंभ हो जाती है, जिसमें वे अपने परिवेश में वस्तुओं, घटनाओं और विचारों को पहचानकर उनके लिए उपयुक्त शब्दों और अर्थों का निर्माण करते हैं। यह प्रक्रिया न केवल शब्दावली के विस्तार में सहायक है, बल्कि भाषा की संरचना और प्रयोग को भी सशक्त बनाती है।

- **शिक्षण में संप्रत्यय निर्माण के प्रतिमान**

  ब्रूनर का संप्रत्यय उपलब्धि प्रतिमान (Bruner's Concept Attainment Model) भाषा अधिगम के क्षेत्र में अत्यंत उपादेय माना गया है। इस प्रतिमान के अनुसार, शिक्षार्थी उदाहरणों के माध्यम से संप्रत्यय की विशेषताओं को पहचानते हैं और भाषा के प्रयोग में उसे आत्मसात करते हैं। यह मॉडल न केवल भाषा विज्ञान, बल्कि अन्य विषयों के शिक्षण में भी प्रभावी सिद्ध हुआ है।

- **भाषाशिक्षण में संप्रत्यय निर्माण की भूमिका**

  भाषाशिक्षण के संदर्भ में, संप्रत्यय निर्माण को भाषा अधिगम की आधारशिला माना गया है। मातृभाषा, द्वितीय भाषा या विदेशी भाषा-सभी के अधिगम में संप्रत्यय निर्माण की प्रक्रिया भिन्न-भिन्न रूपों में कार्य करती है। प्रारंभिक स्तर पर बच्चों के पास सीमित संप्रत्यय होते हैं, जो अनुभव, संवाद, सामाजिक सहभागिता और शिक्षण के माध्यम से धीरे-धीरे विकसित होते हैं। भाषा शिक्षण की विभिन्न विधियाँ, जैसे-व्याकरण-अनुवाद पद्धति, प्रत्यक्ष पद्धति, संरचनात्मक पद्धति आदि, संप्रत्यय निर्माण को केंद्र में रखकर ही विकसित की गई हैं।

- **भाषाविज्ञान और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण**

  भाषाविज्ञान में संप्रत्यय निर्माण को अर्थविज्ञान (Semantics) और मनोभाषाविज्ञान (Psycholinguistics) के अंतर्गत विस्तार से अध्ययन किया गया है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से, भाषा अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने अनुभवों और सामाजिक संपर्कों के आधार पर नए संप्रत्ययों का निर्माण करता है। व्यवहारवाद, संरचनावाद और संज्ञानात्मक सिद्धांतों ने भाषा अधिगम में संप्रत्यय निर्माण की प्रक्रिया को भिन्न-भिन्न रूपों में व्याख्यायित किया है।

- एफ.डी. सस्यूर के संकेतक-संकेतित सिद्धांत के अनुसार, किसी भी संप्रत्यय के निर्माण में ध्वन्यात्मक प्रतीक और अर्थ दोनों का योगदान होता है। संप्रत्यय को मानसिक संकल्पना माना गया है। बालक अपने परिवेश से वस्तुओं को देखकर उनके अर्थ और ध्वनि पक्ष को जोड़ता है, जिससे उसके मस्तिष्क में संप्रत्यय बनते हैं।

- संप्रत्यय अर्जन में सामान्यीकरण और विशेषीकरण की प्रक्रियाएँ सक्रिय रहती हैं। उदाहरण के लिए, बच्चा पहली बार कुत्ता देखता है तो उसकी संकल्पना बनती है, फिर अन्य कुत्तों को देखकर वह सामान्यीकरण करता है, और अन्य जानवरों से भिन्नता पहचानकर विशेषीकरण करता है।
- भाषा अधिगम में शब्द निर्माण और संप्रत्यय निर्माण को सीखना आवश्यक है। भाषा अधिगम के लिए औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार के तरीकों का उपयोग होता है, जिसमें शिक्षार्थी अपने अनुभव, परिवेश और संवाद के माध्यम से भाषा और संप्रत्यय दोनों का विकास करता है।
- स्वैन की 'आउटपुट परिकल्पना' के अनुसार, भाषा अधिगम में शिक्षार्थी को भाषा के प्रयोग के लिए सक्रिय रूप से संलग्न होना चाहिए, जिससे उसकी भाषा और संप्रत्यय निर्माण की योग्यता विकसित होती है।
- संबंधित साहित्य से स्पष्ट होता है कि संप्रत्यय निर्माण के माध्यम से भाषा अधिगम एक जटिल, बहुआयामी और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इसमें सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, भाषिक और शैक्षिक सभी कारक सक्रिय रहते हैं। आधुनिक शोध और शिक्षण पद्धतियाँ इस बात पर बल देती हैं कि भाषा अधिगम को प्रभावी बनाने के लिए संप्रत्यय निर्माण की प्रक्रिया को केंद्र में रखना आवश्यक है।

5. शोध विधि, विश्लेषण और व्याख्या

प्रस्तुत शोध पत्र में विवेचन विश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया गया है तथा विषयगत विश्लेषण को केंद्र में रखकर भाषा अधिगम और संप्रत्यय निर्माण संबंधी सिद्धांतों, संकल्पनाओ तथा एक दूसरे के साथ परस्पर संबंध को व्याख्यायीत किया गया है । भाषा संप्रत्यय से जुड़े अवधारणाओं को उजागर कर संप्रत्यय निर्माण की भूमिका को विस्तार से वर्णित किया गया है । शैक्षिक मनोविज्ञान के प्रमुख सिद्धांतों में भाषा अधिगम और संप्रत्यय निर्माण को विस्तृत रूप से समझाया गया है।

भाषा अधिगम और संप्रत्यय निर्माण

भाषा अधिगम और संप्रत्यय निर्माण एक-दूसरे को मजबूत करने वाली प्रक्रियाएँ हैं। अवधारणात्मक विकास भाषा अधिगम के लिए संज्ञानात्मक आधार प्रदान करता है, जबकि भाषा, विशेषकर लेबलिंग और वर्गीकरण के माध्यम से, संप्रत्यय निर्माण को तेज और गहरा बनाती है, विशेष रूप से अमूर्त विचारों के लिए। प्रभावी भाषा शिक्षा इन प्रक्रियाओं के एकीकरण के लिए संरचित चरणों और अभ्यासों का उपयोग करती है, और डिजिटल उपकरण आधुनिक कक्षाओं में अवधारणात्मक अधिगम को और भी बढ़ा सकते हैं। संप्रत्यय निर्माण बच्चों में भाषा अधिगम की नींव रखता है, जिससे वे अपने परिवेश से जानकारी को वर्गीकृत कर सकते हैं, उनमें भेद कर सकते हैं और अमूर्त रूप में चिंतन कर सकते हैं, जो शब्दावली, व्याकरण और उच्च-स्तरीय भाषाई कौशल के विकास में सहायक होता है।

- **शब्दावली और अर्थ निर्माण**

  संप्रत्यय निर्माण बच्चों को समान लक्षणों के आधार पर वस्तुओं, क्रियाओं और विचारों को सामान्यीकरण करने में सक्षम बनाता है, जो शब्दों के अर्थ समझने और उसका उत्तर देने के लिए आवश्यक है। जैसे, सेब और केला दोनों को "फल" के रूप में पहचानना, बच्चों को "फल" शब्द का सामान्यीकरण करने में मदद करता है।

- **वर्गीकरण और अमूर्तन**

  संप्रत्यय निर्माण के माध्यम से, बच्चे केवल दृश्य समानताओं के आधार पर नहीं, बल्कि संबंधपरक और कार्यात्मक गुणों के आधार पर भी प्राप्त ज्ञान को वर्गीकृत करना सीखते हैं। यह क्षमता जटिल भाषा संरचनाओं जैसे संबंधपरक शब्दों (जैसे, बड़ा, नीचे) और अमूर्त शब्दावली के अधिगम का आधार है।

- **संप्रत्यय निर्माण के संवर्धन में भाषा**

  भाषा स्वयं, विशेषकर लेबलिंग(प्रतीक) और माता-पिता के संवाद के माध्यम से, संप्रत्यय निर्माण को बढ़ाती है। रोजमर्रा की बातचीत में स्पष्ट प्रतीक अथवा संकेत और वर्गीकरण बच्चों को उनकी अवधारणाओं को परिष्कृत करने और श्रेणीबद्ध संबंधों को समझने में मदद करता है (जैसे, वाहन में कार और बस दोनों शामिल हैं)।

- **अंतरपरक संबंध**

  जहाँ संप्रत्यय निर्माण भाषा अधिगम के लिए संज्ञानात्मक आधार प्रदान करता है, वहीं भाषा का संपर्क और उपयोग बच्चों की अवधारणात्मक समझ को और भी परिष्कृत और विस्तृत करता है। यह पारस्परिक संबंध स्पष्ट होता है जब भाषा में देरी या संवेदी समस्याएँ जटिल संबंधपरक अवधारणाओं के निर्माण में कठिनाई उत्पन्न करती हैं, जो आगे भाषा विकास को प्रभावित करती हैं।

संप्रत्यय निर्माण बच्चों को भाषाई संरचना को समझने, नए शब्द और व्याकरणिक संरचनाएँ सीखने में सक्षम बनाता है, और भाषा का उपयोग व सामाजिक संपर्क के माध्यम से बच्चों में संप्रत्यय की अवधारणा निरंतर आकार लेता और विस्तृत होता है। शोध से पता चलता है कि भाषा और संप्रत्यय निर्माण गहराई से जुड़ी संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ हैं।

<u>शैक्षिक मनोविज्ञान के प्रमुख सिद्धांतों में भाषा अधिगम और संप्रत्यय निर्माण को विस्तृत रूप से समझाया गया है-</u>

व्यवहारवादी सिद्धांत (बी.एफ. स्किनर)

स्किनर के अनुसार, बच्चे अनुकरण, प्रोत्साहन और अनुक्रिया (कंडीशनिंग) के माध्यम से भाषा सीखते हैं। जब कोई बच्चा कोई शब्द सही बोलता है और उसे सकारात्मक प्रतिक्रिया (जैसे प्रशंसा या वांछित वस्तु) मिलती है, तो वह व्यवहार दोहराने की संभावना बढ़ जाती है। इस प्रकार, भाषा पर्यावरणीय संपर्क और प्रोत्साहन के माध्यम से आदतों के रूप में भी सीखी जाती है। जैसा परिवेश बालकों को मिलता है वह उसे ग्रहण करता है। उदाहरण के लिए यदि उसके आस-पास कमल पुष्प को पंकज बोलते हैं तो उसका संप्रत्यय निर्माण कमल के लिए सदैव पंकज शब्द के रूप में ही प्रथमत: रहेगा ।

जन्मजातवाद सिद्धांत (नोम चॉम्स्की)

चॉम्स्की ने तर्क दिया कि बच्चों में भाषा के लिए एक जन्मजात क्षमता होती है, जिसे 'भाषा अर्जन यंत्र' (Language Acquisition Device - LAD) कहा जाता है। यह जैविक तंत्र बच्चों को न्यूनतम मार्गदर्शन के साथ स्वाभाविक रूप से भाषा सीखने में सक्षम बनाता है, जिससे यह समझाया जा सकता है कि विभिन्न संस्कृतियों तथा परिवेश के बच्चे समान रूप से और तेज़ी से भाषा सीखते हैं। यह सिद्धांत यह भी मानता है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था में भाषा अर्जन के लिए एक महत्वपूर्ण अवधि होती है। जिसमें बच्चों को अधिक से अधिक शब्दों से परिचय मिलता है और वह उन शब्दों का सही प्रयोग कर अर्थ लगाते हैं और प्रश्नों के उत्तर देने में भी समर्थ हो पाते हैं ।

संवादात्मक सिद्धांत (जेरोम ब्रूनर)

यह दृष्टिकोण सामाजिक संपर्क और पारिवारिक परिवेश के साथ संवाद के महत्व को रेखांकित करता है। ब्रूनर ने 'भाषा अर्जन समर्थन प्रणाली' (Language Acquisition Support System - LASS) की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें वयस्क बातचीत, अनुकरण और प्रतिक्रिया के माध्यम से बच्चों की भाषा सीखने में सहायता करते हैं। नियमित संपर्क और अर्थपूर्ण संवाद बच्चों को भाषा सीखने का संदर्भ और प्रेरणा प्रदान करते हैं।

संज्ञानात्मक सिद्धांत (पियाजे)

पियाजे ने भाषा अधिगम को बच्चे के संज्ञानात्मक विकास के व्यापक संदर्भ में रखा। उनका मानना था कि बच्चों को पहले कुछ अवधारणाओं को समझना चाहिए, उसके बाद ही वे उन अवधारणाओं को व्यक्त करने वाले भाषा के विभिन्न रूपों का उपयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, किसी बच्चे को "बड़ा" या "छोटा" जैसे तुलनात्मक विशेषणों का उपयोग करने से पहले आकार की तुलना की अवधारणा समझनी चाहिए। इस प्रकार, भाषा विकास बच्चे की बौद्धिक बढ़त से गहराई से जुड़ा है और जैसे-जैसे उनकी सोच परिपक्व होती है, वैसे-वैसे भाषा कौशल भी विकसित होते हैं। पियाजे के अनुसार, बच्चों में पहले आवश्यक संप्रत्ययों को और मानसिक संरचनाओं को विकसित करनी चाहिए, तभी वे उन अवधारणाओं को व्यक्त करने वाले भाषाके अनेक रूपों को सीख सकते हैं।

वायगोत्स्की का समाज-सांस्कृतिक सिद्धांत

वायगोत्स्की ने ज़ोर दिया कि संप्रत्यय निर्माण एक सामाजिक प्रक्रिया है, जो गहराई से भाषा पर निर्भर करती है। उन्होंने तर्क दिया कि भाषा एक मनोवैज्ञानिक उपकरण के रूप में कार्य करती है, जिससे बच्चे "निकट विकास क्षेत्र" (Zone of Proximal Development - ZPD) में मार्गदर्शित संवाद के माध्यम से अवधारणाओं का निर्माण और परिष्करण करते हैं।

रचनावादी दृष्टिकोण के अनुसार, ज्ञान और अवधारणाएँ व्यक्ति द्वारा निर्मित होती हैं, केवल शिक्षक से छात्र तक स्थानांतरित नहीं होतीं। भाषा इस निर्माण की केंद्रीय कड़ी है, क्योंकि यह बच्चों को अपने अनुभवों पर विचार करने, अपनी समझ को व्यक्त करने और आलोचनात्मक सोच में संलग्न होने की अनुमति देती है। भाषा अधिगम एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें पर्यावरणीय प्रोत्साहन, आनुवांशिक तंत्र, सामाजिक संपर्क और संज्ञानात्मक विकास सभी मिलकर योगदान करते हैं।

संज्ञानात्मक विकास और भाषा विकास के चरण

इंद्रियानुभव (जन्म से 2 वर्ष) इस चरण में बच्चे इंद्रिय द्वारा प्राप्त अनुभवों और क्रियाओं के माध्यम से सीखते हैं। भाषा मुख्यतः गैर-मौखिक होती है, और संचार ध्वनियों और इशारों के माध्यम से होता है। इस चरण के अंत तक, बच्चे वस्तुओं की मानसिक छवियाँ बनाना शुरू कर देते हैं और सरल शब्दों का प्रयोग करने लगते हैं। **पूर्व-संक्रियात्मक (2–7 वर्ष)** इस चरण में बच्चों का शब्द भंडार तेजी से बढ़ता है और वे प्रतीकों (शब्दों) का उपयोग वस्तुओं और अनुभवों के प्रतिनिधित्व के लिए करने लगते हैं। हालांकि, उनकी सोच अभी भी आत्मकेंद्रित और तर्कहीन होती है। भाषा विकास में प्रतीकात्मक खेल और सरल वाक्य प्रयोग प्रमुख होते हैं। **मूर्त-संक्रियात्मक (7–11 वर्ष)** इस चरण में बच्चों की सोच अधिक तर्कसंगत और संगठित हो जाती है। वे अधिक जटिल भाषा संरचनाओं को समझ सकते हैं, जैसे कि तुलनात्मक विशेषण, क्योंकि वे इन अवधारणाओं को समझने लगे हैं। परिचित परिस्थितियों में हुई बातचीत और संवाद को समझने लगते हैं । **औपचारिक-संक्रियात्मक (12 वर्ष और उससे ऊपर)** किशोर अमूर्त रूप से सोचने और भाषा का उपयोग काल्पनिक और अमूर्त विचारों पर चर्चा करने के लिए करने लगते हैं। किसी भी परिस्थितियों अथवा घटना के विषय में समझने लगते हैं और अपनी स्वयं की प्रतिक्रिया करते हैं । साथ ही इस अवस्था तक बच्चे में भाषा की निश्चित समझ विकसित हो जाती है जिससे वह प्रवाह के साथ स्वाभाविक रूप से बातचीत करते हैं ।

पियाजे के अनुसार, बच्चे नई शब्दावली को अपने मौजूदा मानसिक ढाँचों में समाहित करते हैं (Assimilation) और जब नए अनुभव उनके ढाँचों में फिट नहीं होते तो वे उन्हें समायोजित (Accommodation) करते हैं। यह सतत प्रक्रिया उन्हें भाषा और संसार दोनों की समझ को दृढ़ करती है। पियाजे ने इस बात पर बल दिया कि बच्चे भाषा को तभी अर्थपूर्ण ढंग से सीखते हैं जब वह उनके वास्तविक अनुभवों से जुड़ी हो। किसी शब्द को उसके संदर्भ के बिना सीखना अर्थहीन है; वास्तविक भाषा विकास तब होता है जब बच्चा शब्दों को अपनी अनुभूत अवधारणाओं से जोड़ पाता है। पियाजे के अनुसार, भाषा विकास संज्ञानात्मक वृद्धि के साथ-साथ उसके खुद के अनुभव पर निर्भर करता है। जैसे-जैसे बच्चे आवश्यक मानसिक संरचनाएँ और अवधारणाएँ विकसित करते हैं, वे अपने अनुभवों को समझने और व्यक्त करने के लिए भाषा का उपयुक्त प्रयोग सीखते हैं।

भाषा अधिगम और संप्रत्यय निर्माण का सैद्धांतिक आधार

पियाजे ने तर्क दिया कि बच्चों को पहले अवधारणाएँ बनानी चाहिए, उसके बाद ही वे उन अवधारणाओं को व्यक्त करने वाले भाषा के विभिन्न रूपों को सीख सकते हैं। उदाहरण के लिए, किसी बच्चे को "बड़ा" या "छोटा" जैसे तुलनात्मक विशेषण सीखने से पहले आकार की तुलना की अवधारणा को समझना चाहिए। वायगोत्स्की ने ज़ोर दिया कि संप्रत्यय निर्माण उच्च-स्तरीय संज्ञानात्मक और भाषाई कार्यों के लिए एक मौलिक घटक है। भाषा, अनुभव और तर्क सभी बच्चों के सीखने और अवधारणाएँ विकसित करने में महत्वपूर्ण हैं।

संप्रत्यय निर्माण में भाषा एक उपकरण

भाषा बच्चों को नाम देने (लेबलिंग) के माध्यम से उन्हें इंद्रिय, संबंधपरक और कार्यात्मक विशेषताओं के आधार पर उत्तेजनाओं को वर्गीकृत और भेद करने में मदद करती है। वस्तुओं और क्रियाओं को नाम देने की क्रिया ठोस और अमूर्त दोनों अवधारणाओं के निर्माण को बढ़ाती है, विशेष रूप से अमूर्त अवधारणाओं के अधिगम में। भाषा बच्चों में संप्रत्यय निर्माण को आकार देने और सुविधाजनक बनाने का एक मौलिक उपकरण है, जो अनुभवों को व्यवस्थित करने के माध्यम और संज्ञानात्मक विकास के उत्प्रेरक दोनों के रूप में कार्य करती है।

सवाल यह कौंधता है कि भाषा, बच्चे के संप्रत्यय निर्माण में कैसे सहायक है?

जब बच्चे नई जानकारी से सामना करते हैं जो उनके मौजूदा ज्ञान से मेल नहीं खाती, तो एक "संज्ञानात्मक संघर्ष" या असंतुलन कि स्थिति उत्पन्न होती है। इस संघर्ष का समाधान-अक्सर चर्चा, व्याख्या या मौखिक तर्क के माध्यम से-नई अवधारणाओं के निर्माण की ओर ले जाता है। भाषा बच्चों को इन भिन्नताओं को व्यक्त करने, तुलना करने और सुलझाने के लिए आवश्यक संरचना और शब्दावली प्रदान करती है। भाषा अधिगम एक सक्रिय प्रक्रिया है; बच्चे सक्रिय रूप से अपने परिवेश के साथ जुड़ते हैं और सूचना को जानने और उसे समझने तथा निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए भाषा का उपयोग करते हैं। वयस्कों और साथियों के साथ रोज़मर्रा की बातचीत के दौरान, बच्चे नए शब्दों और अवधारणाओं के संपर्क में आते हैं, जिन्हें वे आत्मसात कर अपने परिवेश तथा अन्य स्थितियों की समझ का निर्माण करते हैं। भाषा बच्चों को ठोस अनुभवों से अमूर्त सोच की ओर बढ़ने में सक्षम बनाती है। उदाहरण के लिए, "कुत्तों" के कई अनुभवों के बाद, बच्चे भाषा का उपयोग करके "कुत्ता" को एक श्रेणी के रूप में सामान्यीकृत करते हैं। इस प्रक्रिया में नाम से बुलाना, विवरण देना, और समानताओं-भिन्नताओं पर चर्चा करना शामिल है जो केवल भाषा के माध्यम से ही संभव होते हैं।

भाषा अधिगम में संप्रत्यय निर्माण का प्रभाव

शैक्षिक परिवेश में प्रयुक्त भाषा की गुणवत्ता सीधे अधिगम की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। वे शिक्षक जो समृद्ध व्याख्याएँ देते हैं, चर्चा को प्रोत्साहित करते हैं और सटीक शब्दावली का उपयोग करते हैं, बच्चों को लचीली, प्रासंगिक और स्थायी अवधारणाएँ विकसित करने में मदद करते हैं। बच्चों के मूल्य, विश्वास और भावनाएँ उनकी अवधारणात्मक वृद्धि को प्रभावित करती हैं। बच्चों को अपने विचार और तर्क भाषा में व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना, अवधारणाओं की गहरी समझ और व्यक्तिगत जुड़ाव को बढ़ावा देता है।

संप्रत्यय निर्माण में भाषा अधिगम की भूमिका

भूमिका	संप्रत्यय निर्माण में भाषा अधिगम
संज्ञानात्मक संघर्ष	अंतर्द्वंद्व को सुलझाने और नई अवधारणाओं के निर्माण में सहायता करता है
सामाजिक संपर्क	संवाद और प्रतिक्रिया के माध्यम से नए विचारों के संपर्क को आसान बनाता है
अमूर्तता और सामान्यीकरण	बच्चों को विशिष्ट अनुभवों से अमूर्त श्रेणियों तक पहुँचने में सक्षम बनाता है
विचारों का संगठन	वर्गीकरण, तुलना और विश्लेषण के लिए उपकरण प्रदान करता है
सांस्कृतिक प्रभाव	भाषा के माध्यम से सामाजिक ज्ञान, मूल्य और मानदंडों का संप्रेषण करता है

भाषा अधिगम में संप्रत्यय निर्माण के प्रमुख बिंदु

- **शाब्दिक-सार्थक (Verbal-semantic)**
  भाषा प्रणाली और शब्दार्थ का अधिग्रहण।

- **थिसॉरस (Thesaurus)**
  संज्ञानात्मक रणनीतियों का विकास, जैसे कि अर्थ संबंधों की पहचान और भाषाई घटनाओं की व्याख्या।

- **प्रेरणात्मक-व्यावहारिक (Motivational-pragmatic)**
  संवादात्मक संदर्भों में अवधारणाओं का अनुप्रयोग, उद्देश्य और स्थिति के अनुसार भाषण निर्माण।

- **अमूर्तन कौशल का निर्माण**
  शब्दों को उनके संदर्भों से जोड़कर अमूर्तता की क्षमता विकसित करना।

- **शब्दार्थीय विश्लेषण को प्रोत्साहित करना**
  पर्यायवाची/विलोम की पहचान और अर्थ समूहों के माध्यम से विश्लेषण।

- **संचार कौशल को बढ़ावा देना**
  लक्षित भाषण कृत्यों की रचना द्वारा संवादात्मक दक्षता को प्रोत्साहित करना।

निष्कर्ष

भाषा के समुचित प्रयोग से सोचने, कल्पना करने के प्रति जागरूकता और नियंत्रण शक्ति बढ़ती है। जैसे-जैसे बच्चे आकार, मात्रा या संबंध जैसी अवधारणाओं के लिए शब्दों का उपयोग करना सीखते हैं, वे अधिक प्रभावी ढंग से जानकारी को वर्गीकृत, तुलना और विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करते हैं। विचारों का यह संगठन स्कूल में सीखने और समस्या-समाधान के लिए आवश्यक है। भाषा वह मुख्य साधन है जिसके द्वारा सांस्कृतिक मूल्य, मानदंड और समयक ज्ञान बच्चों तक पहुँचता है। कहानियों, व्याख्याओं और साझा गतिविधियों के माध्यम से, बच्चे वयस्कों और समुदाय से मौजूदा अवधारणाएँ आत्मसात करते हैं, जिससे उनकी संप्रत्ययात्मक रूपरेखा और समृद्ध होती है।

भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि चिंतन, भाषा अधिगम और संप्रत्यय निर्माण का एक शक्तिशाली उपकरण है। यह बालकों को अपने अनुभवों को समझने, अपने ज्ञान का संगठन करने और आजीवन सीखने के लिए आवश्यक उच्च-स्तरीय संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं में संलग्न होने में सक्षम बनाती है।

संदर्भसूची -

1. https://www.tppl.org.in/-psychological-perspective-of-education-.html
2. https://www.onlyiwin.com/2021/05/meaning-nature-and-scope-of-educational.html
3. https://pedagogyuniverse.com/jean-piaget-theory-in-hindi-part-2/
4. https://hi.wikipedia.org/wiki
5. https://manuu.ac.in/DDE-SelfLearnmaterial/BEDHindi.pdf
6. https://uou.ac.in/sites/default/files/2023-04/A3.pdf
7. https://manuu.edu.in/dde/sites/default/files/Pedagogy
8. https://ia801502.us.archive.org/31/items/in.ernet.dli.2015.481573/2015.481573.education-psychology.pdf
9. https://rmcollegebed.org/downloads/Piaget_Theory_of_Learning.-converted_Md._Shakil_Akhtar.pdf
10. https://en.wikipedia.org/wiki/Piaget's_theory_of_cognitive_development
11. https://www.psychology.org/resources/educational-psychology-theories/
12. https://childdevelopment.com.au/areas-of-concern/understanding-language/understanding-concepts
13. https://onlinelibrary.wiley.com/doi/abs
14. https://academic.oup.com/edited-volume
15. https://archive.org/details/Vakyapadiya